P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817

Remarking
Vol-II * Issue-V* October - 2015

सतत विकास में बागवानी की भूमिका (पिथौरागढ़ जनपद के सन्दर्भ में)

चन्द्रावती भट्ट
सहायक प्राध्यापिका,
भूगोल विभाग,
एल0एस0एम0 राजकीय स्नानकोत्तर महाविद्यालय,
पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड

सारांश

मध्य हिमालय की हिमाच्छादित पर्वत श्रृखलाओं की तहलटी में अर्न्तराष्ट्रीय सीमाओं में स्थित सीमान्त जनपद पिथौरागढ प्राकृतिक, सौन्दर्य, भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण सें उल्लेखनीय है। विषम भौगोलिक परिस्थितियों के प"चात भी यहाँ का आर्थिक आधार कृषि है। कृषि के साथ–साथ बागवानी एवं फल उत्पादन भी प्राचीन समय से होता रहा है कम लागत एवं परिश्रम से अधिक उत्पादन सम्भव है। फलों के महत्व को देखते हुए कृषकों को प्रोत्साहित करना अति आव"यक है यह जैव विविधता को सुरक्षित एवं संरक्षित करता है। सतत विकास का उद्द"य दीर्घ अवधि तक उत्पादन एवं प्रयोग सुनि"चत करना है। भावी पीढ़ी को देखते हुए बागवानी का सतत् विकास में महत्वपूर्ण योगदान हैं फलदार वृक्ष पीढ़ी दर पीढो में आर्थिक साधन, पौष्टिक–आहार, पर्यावरण संरक्षण, के माध्यम से पारिस्थितिकी तन्त्र के तत्वा को संचय एवं पुर्नस्थापन करता है। भौगोलिक वातावरण एव परिस्थितियों के साथ बागवानी सर्वोत्तम हैं, लेकिन सुदूरपर्वतीय भागों में निवास करने वाले कृषकों को फलोद्यानों की ओर आकर्षित करना आव"यक है, जिससे भावी पीढ़ी के लिए भी आर्थिक साधन सुरक्षित रखे जा सकें। सतत विकास आर्थिक स्थिति, सुदृढता एवं भविष्य को देखत हुए बागवानी के महत्व को समझना आव"यक हैं ।

मुख्य शब्द : सतत, विकास, पर्यावरण, सुरक्षित, भावी पीढ़ी, समृद्ध।

प्रस्तावना

भारत के उत्तरी पर्वतीय भाग मध्य हिमालय के हिमाच्छादित पर्वत श्रृखलाओं की तलहटी में नवसृजित उत्तराखण्ड राज्य का सीमान्त जनपद– पिथौरागढ़ अन्तराष्ट्रीय सीमाओं पर स्थित है। वर्ष 1960 में अल्मोड़ा जनपद सें अलग किया गया। यह हिमाच्छादित "िाखरों बुग्यालों वनस्पतियों, झरनों और ग्लें"ायरों, अलौलिक दृ"यों, प्राकृतिक छटाओं, प्राचीन धरोहरों, सांस्कृतिक परम्पराओं, शुद्ध–पर्यावरण एवं राजनैतिक दृष्टि से वि"ाष्ट स्थान लिए है यहाँ की 85.6 प्रति"ात जनसंख्या गावों में निवास करती है, जिनका आर्थिक आधार कृषि है। कृषि के साथ–साथ बागवानी एवं फल उत्पादन का महत्वपूर्ण स्थान है। क्याकि बागवानी कृषि का अभिन्न अंग है। यहाँ की 68.70 प्रति"ात जनसंख्या कृषि कार्य करती है। कृषि के साथ–साथ कम परिश्रम एवं कम लागत में आधिक उत्पादन एवं भावी पीढ़ी के लिए भी सुरक्षित आर्थिक साधन उपलब्ध किये जा सकते है। फलदार वृक्षों का सतत् विकास, जैव विविधता को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका हैं ।

अध्ययन का उद्देश्य

जनपद के ग्रामीण क्षेत्रो में कृषि के साथ सतत विकास में बागवानी की भूमिका को देखते हुए बागवानी की ओर ध्यान आकर्षित करना है। फल उत्पादन के लिए अनुकूल भौगोलिक वातावरण एवं पोषक तत्वों को देखते हुए आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ एवं समृद्ध बनाने के लिए कृषकों को प्रोत्साहित करना आव"यक है। भौतिक बनावट, मिट्टी एवं जलवायु को देखते हुए बागवानी का विकास करना अति आव"यक है।

अध्ययन क्षेत्र

पिथौरागढ़ जनपद का कुल भौगालिक क्षेत्रफल 7218 वर्ग कि0मी0 है। कुल जनसंख्या 482439 (वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार) है। राज्य की कुल जनसंख्या का 5.45 प्रति"ात हैं कुल जनसख्या का 85.60 ग्रामीण व 14.40 प्रति"ात नगरीय है। जनपद का विस्तार 29^0–27^1 व 30^0 – 49^1 उत्तरी अक्षां"ा एवं 79^0–50^1 पूर्वी दे"ाान्तर सें 81^0 –1^1 पूर्वी दे"ाान्तर तक है।

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue-V* October - 2015

अध्ययन विधि

1. सेन्सस हैण्डबुक एवं सांख्यिकीय पत्रिका एवं अभिलेखों से आंकडा का संकलन।
2. साक्षात्कार के आधार लोगों की अभिरूचि एवं आकलन।
3. आंकडों का वि"लेषणात्मक अध्ययन ।

परिणाम एवं व्याख्या

मानव के जीवन में विभिन्न प्रकार के पोषक तत्वों का प्राथमिक स्थान हैं। फल आहार सार्वभौमिक है, इनका उपयोग प्राचीन काल से होता आ रहा है फल उत्तम एवं शद्ध आहार के रूप में प्रचलित है। पौष्टिक तत्वों में फलों का उपयोग वर्तमान वैज्ञानिक युग में बढ़ता जा रहा है। सतत विकास को देखते हुए वर्तमान समय में भावी पीढ़ो के लिए सुरक्षित रखने का प्रयास किया जा रहा है। प्रति हे0 उत्पादन मूल्य अधिक, ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार क्षेत्रीय औद्योगिक विकास क लिए ही नही बल्कि पारिस्थितिकी तन्त्र की सुरक्षा, शद्ध पर्यावरण, आयुर्वेद, जल संरक्षण, एवं सम्बद्धन, बाढ नियन्त्रण, भूमि कटान को रोकने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। बागवानी का पर्यावरणीय विकास में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप मे महत्व है सतत विकास में बागवानी की भूमिका भावी पीढ़ी को सुरक्षित आर्थिक साधन उपलब्ध कराती है। फलदार वृक्षों से उत्पादन वर्तमान के साथ–साथ भविष्य म भी उत्पादन होता रहता है। इससे आर्थिक दक्षता एव विकास निहित है।

पिथौरागढ़ जनपद की भौगोलिक बनावट, मिट्टी एवं जलवायु फल उत्पादन एवं बागवानी के लिए सवोत्तम हैं। यहाँ मुख्य व्यवसाय कृषि है। कृषि के साथ–साथ बागवानी भी सम्भव है। फलों का उत्पादन मूल्य खाद्यानों से कई गुना अधिक है, कुल भूमि का 469786 हे0 प्रतिवेदित हैं।

फलों के अर्न्तगत का क्षेत्रफल–14688 हे0 है, और उत्पादन 34538 मी0टन हआ है। वर्ष 2007–08 में 39468 हे0 क्षेत्रफल था और वर्ष 2011–12 में यह 39418 हे0 हो गया। उद्यानों के अन्तर्गत क्षेत्रफल 2010–11 में 103.03 हे0 था जो 2012–13 में 107 हे0 हो गया। वर्ष 2008–09 में उत्पादन 36748 मि0टन हुआ और वर्ष 2010–11 में 30103 मी0टन और 2012–13 में उत्पादन 46098 मी0टन हुआ, फलदार वृक्षों एवं उद्यानों के लिए पयाप्त मात्रा में भूमि और सम्भावनाऐं होने पर भी क्षेत्रफल और उद्यानों में जनसंख्या के आधार पर वृद्धि नही हुई है, जबकि प्रतिवेदित क्षेत्र में फलदार वृक्षों की संख्या एवं क्षेत्र को बढाया जा सकता है। जिससे उत्पादन और उत्पादन मूल्य में वद्धि हो सकती है और आर्थिक स्तर सुदृढ हो सकता है। प्रतिवर्ष उत्पादन में भी असमान्ता है क्योंकि फल उत्पादन मौसम की द"ाओं पर निर्भर करता है। सतत विकास में बागवानी की भूमिका को देखते हुए फलदार वृक्षों की संख्या को बढ़ाया जा सकता हैं कृषि के साथ–साथ बागवानी की ओर कृषकों की रूचि बढ़ाने से सतत विकास सम्भव है। फल उद्यानों से उत्पादन भावी पीढ़ी के लिए सुरक्षित एवं सरक्षित साधन है। जनसंख्या की वृद्धि के साथ स्थानीय फलों की मांग बढ़ती जा रही है। कृषि के साथ–साथ प्राचीन समय से फलों का उत्पादन होता रहा हैं शुद्ध पर्यावरण, "ीत–शीतोष्ण जलवायु कटिबन्ध के फल स्वास्थ्य प्रद होते हैं। फिर भी यहाँ के लोगों की मानसिकता में स्वरोजगार एवं भावी पीढ़ी के लिए सुरक्षित एवं सरंक्षित की दूर दृष्टि नहीं है।

समस्या

1. शहरीकरण से निरन्तर गाँवों का खाली होना।
2. ग्रामीणों की मानसिकता में परिर्वतन एवं पलायन की भवना प्रबल।
3. जगली जानवरों का आंतक एव फलो को क्षति।
4. बाजार केन्द्रों एव विपरण क्रेन्द्रों का अभाव, फल संरक्षण क्रेन्द्रों की कमी।
5. फलों के महत्व एवं उपयोगिता की जानकारी का अभाव।
6. प्राकृतिक आपदाओं का प्रभाव जैसे भूमि कटान, भूस्खलन।
7. सुदूर पहाडो में विपरीत भौगोलिक परिस्थितियों में जीवन यापन करने वाले ग्रामीणों आबादी को बिजली, पानी, सड़क, "िक्षा, तकनिकी "िक्षा, चिकित्सा की असुविधाएँ है।

सुझाव

1. यहाँ की 85.60 प्रति"ात ग्रामीण आबादी के लिए सतत विकास एवं पोषणोय क्षमता को देखते हुए भावी पीढ़ी के लिए फलदार वृक्षों को लगाना आव"यक समझा जाये।
2. सतत विकास के लिए पारिस्थितिकी तन्त्र की सुरक्षा के महत्व को ग्रामीण वासियों को समझाकर जानकारी देकर जागरूकता लायी जाये।
3. पर्वतीय क्षेत्र शीतोष्ण फलों के लिए अनुकूल भौगोलिक वातावरण प्रदान करते है। जिससे कई पीढियो के लिए उत्पादन देने वाले बादाम, अखरोट, चेस्टनट फलों के उत्पादन के लिए प्रोत्साहन दिया जाय।
4. कृषकों को मौसम के अनुसार फलदार वृक्षों का वितरण अति आव"यक ह।
5. भावी पीढ़ो के सुरक्षित एवं संरक्षित पर्यावरण, आर्थिक साधन एव रोजगार की दृष्टि से बागवानी का विकास किया जाय।
6. क्षेत्र के समृद्ध एवं सुदृढ एवं खु"ाहाल बनाने के लिए स्थानीय फलों के उत्पादन एवं सम्बन्धित कुटीर एवं लघु उघोगों की स्थापना की जाय।
7. प्रत्येक परिवार को खाली जगह पर फलदार पेड़ लगाने को प्रोत्साहन किया जाय जिससें फलों एवं वृक्षों की उपयोगिता बनी रहें।
8. यहाँ मेहल जाति के वृक्षों की संख्या बहुत अधिक होती है, जिसमें ना"ापाती को ट्रान्सपैरन्ट किया जा सकता है, जिसका उत्पादन अन्य फलों से कई गुना अधिक है।

निष्कर्ष

सतत विकास को ध्यान मे रखते हुए पौष्टिक आहार, रोजगार एव फल संरक्षण केन्द्रों की दृष्टि से पर्वतीय भाग सर्वोपरि है। सतत विकास से आर्थिक दक्षता एवं विकास, पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी पारितन्त्र का परिरक्षण अन्तः तथा अन्तर पीढ़ी में समानता, सामाजिक न्याय, जनसंख्या को स्थिरता मूल्यों व आचारों में वृद्धि होती है। उन क्षेत्र के व्यक्तियों या ग्रामीणों आबादी के

लिए भी शीतोष्ण फलों से सर्वागीण विकास सम्भव हैं। यहाँ की ग्रामीण जनसंख्या मैदानों से आयात फलों से प्रायः वंचित रह जाती है। इसलिए स्थानीय फलों का उपयोग ही उचित है, कृषि के साथ–साथ सतत विकास एवं आर्थिक स्रोत को देखते हुए बागवानी की और प्रेरित होना अति आव"यक है यहाँ पर ना"ापाती का उत्पादन एवं वृक्षों की संख्या को बढाने के लिए प्रोत्साहन अति आव"यक है। शीतोष्ण फलों के उत्पादन के लिए यह पहाड़ो क्षेत्र सवात्तम है। उत्पादन का औषधीय महत्व, पोषक तत्व एवं उपयोगिता पलायन पर अंकु"ा, स्वरोजगार, आर्थिक स्थिति को सुदृढ एवं क्षेत्र को आत्म निर्भर बनाने और जनपद के विकास के लिए अति आव"यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सांख्यिकीय पत्रिका–2009 एवं 2013, जनपद पिथौरागढ़।
2. वी0के0 श्रीवास्तव, एवं बी0पी0राव, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी, पब्लिके"ान–वसुन्धरा प्रका"ान–236 दाउदपुरा गोरखपुर ।
3. के"ारी नन्दन त्रिपाठी एवं आलोक कुमार, वर्ष 2011–12 प्रका"ान– 154/91 डी0 रामानन्द नगर अल्लापुर इलाहाबाद।
4. मैठानी, डी0डी0, गायत्री प्रसाद, राजे"ा नौटियाल, उत्तराखण्ड का भूगोल, 2010, शारदा पुस्तक भवन, यूनिर्वसिटी रोड़ इलाहाबाद।
5. पंत0 डी0सी0, भारत मे ग्रामीण विकास, कालेज बुक डिपो, जयपुर, नई दिल्ली , बम्बई ।
6. सिंह, सविन्द, पर्यावरण भूगोल, इलाहाबाद –1991